मैं अपने आप पढ़ूँ
हुलगुल कथा

लेखिका: गीता धर्मराजन | चित्राँकन: सुजाता सिंह

KATHA

पहला हिंदी संस्करण 1992, दूसरा संस्करण 2009
तीसरा संस्करण 2011, चौथा संस्करण 2013, पाँचवाँ संस्करण 2015
कृति स्वामित्व © कथा, 1992
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन, 1992
मौलिक चित्रॉकन कृति स्वामित्व © सुजाता सिंह, 1992
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-08-3

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित हैं।

ए–3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4141 6600 . 4182 9998 . फैक्सः 2651 4373

ई–मेलः marketing@katha.org

वेबसाइटः www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।

मोटा राजा

एक था राजा, मोटा राजा।
पतलापुर का मोटा राजा।

मोटू ओझा, रानी मोटी
साथ खड़े लगे दो चींटी।

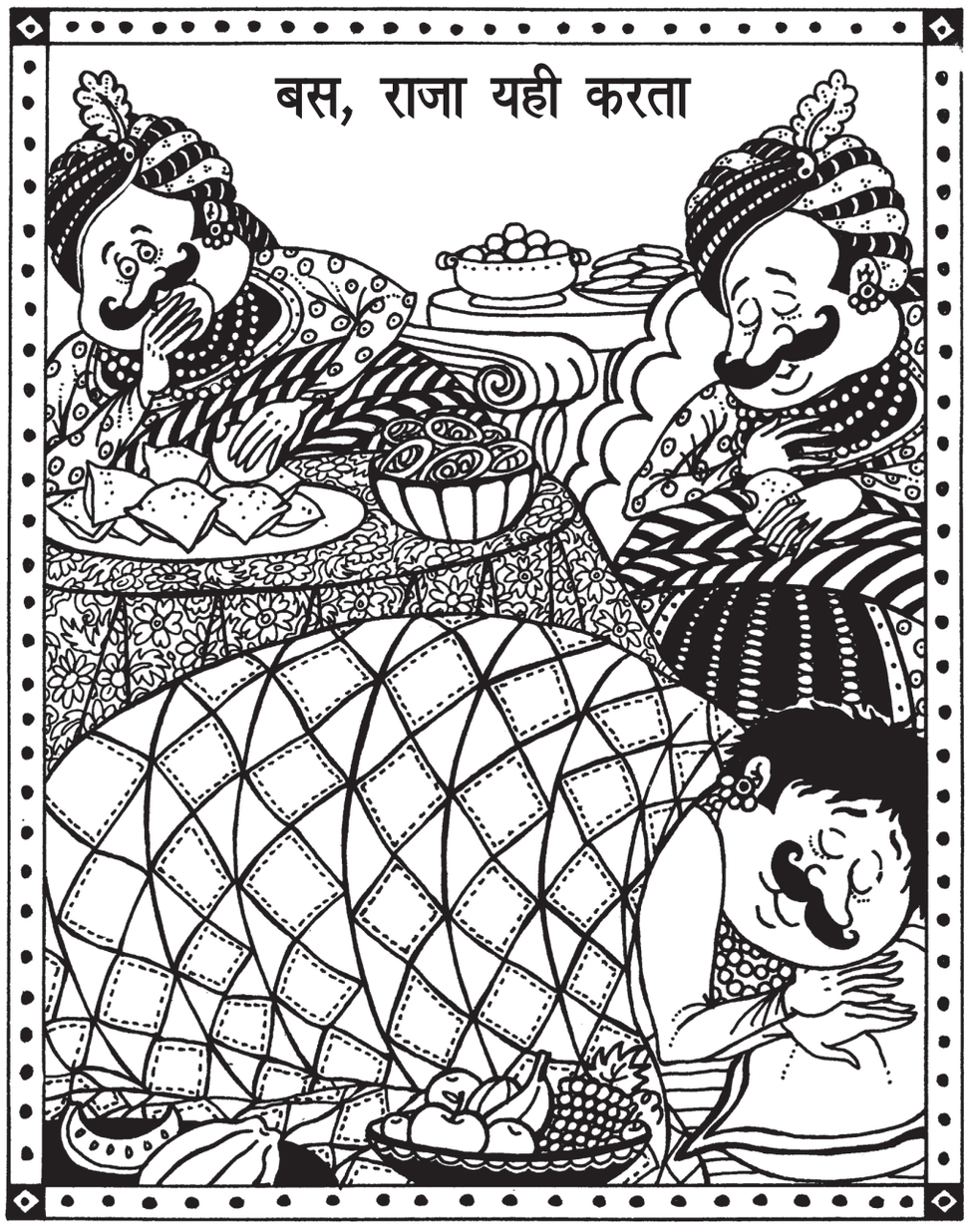

खाता-सोता, सोता-खाता,
राजा दिनभर यही था करता।

मोटापा न भाया

उसने एक दिन फिर यह सोचा,
'मैं ही क्योंकर इतना मोटा?'

पर, पतला न हो सका

कसरत करता, खाता कम अब
फिर भी पतला हुआ नहीं जब ...

अगले दिन ऐलान कराया,
नगर के लोगों को बुलाया।

'राजा को जो पतला कर दे
कलर टी.वी. इनाम में ले ले!'

टीचर जी की बेटी सीमा,
स्कूल गई थी वह कभी न।

पढ़ना-लिखना अपने से सीखा,
नहीं किसी ने घर में देखा।

उसको यह एक आया विचार,
'राजा क्यों न पढ़े किताब?

खाना-सोना करेगा कम
पढ़ने में जब लगेगा मन।'

मान गया राजा

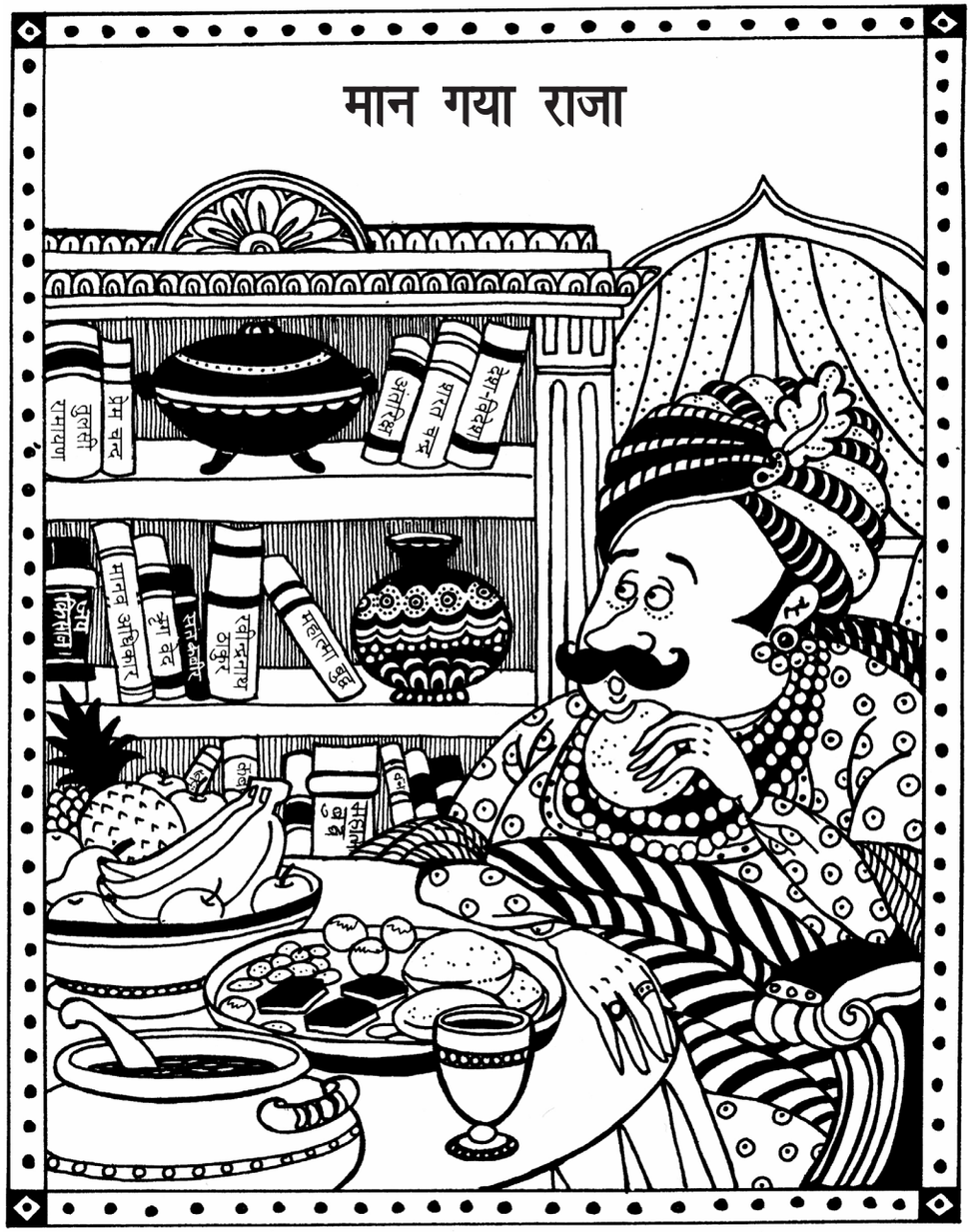

राजा ने सोचा नहीं है कम,
उस लड़की की बात में दम।

एक किताब पढ़ी

उसने एक किताब उठाई,
ऊपर-नीचे नज़र भगाई।

राजा ने जब उठा ली किताब,
एक, दो, ... सौ ... पढ़ लीं हज़ार।

खाना-सोना छूट गया सब,
बना राजा पतला और तेजस तब।

स्कूल गया राजा

स्कूल गया राजा लेकर कलर टी.वी.
मिली न सीमा, न कोई और लड़की।

कोई लड़की नहीं थी

मिला जब लड़की ही को इनाम
स्कूल में क्यों न उसका नाम!

पढ़े हर लड़की राजा का हुक्म

लड़की है न लड़के से कम,
पढ़े हर लड़की था राजा का हुक्म!

पढ़ना है सबका हक

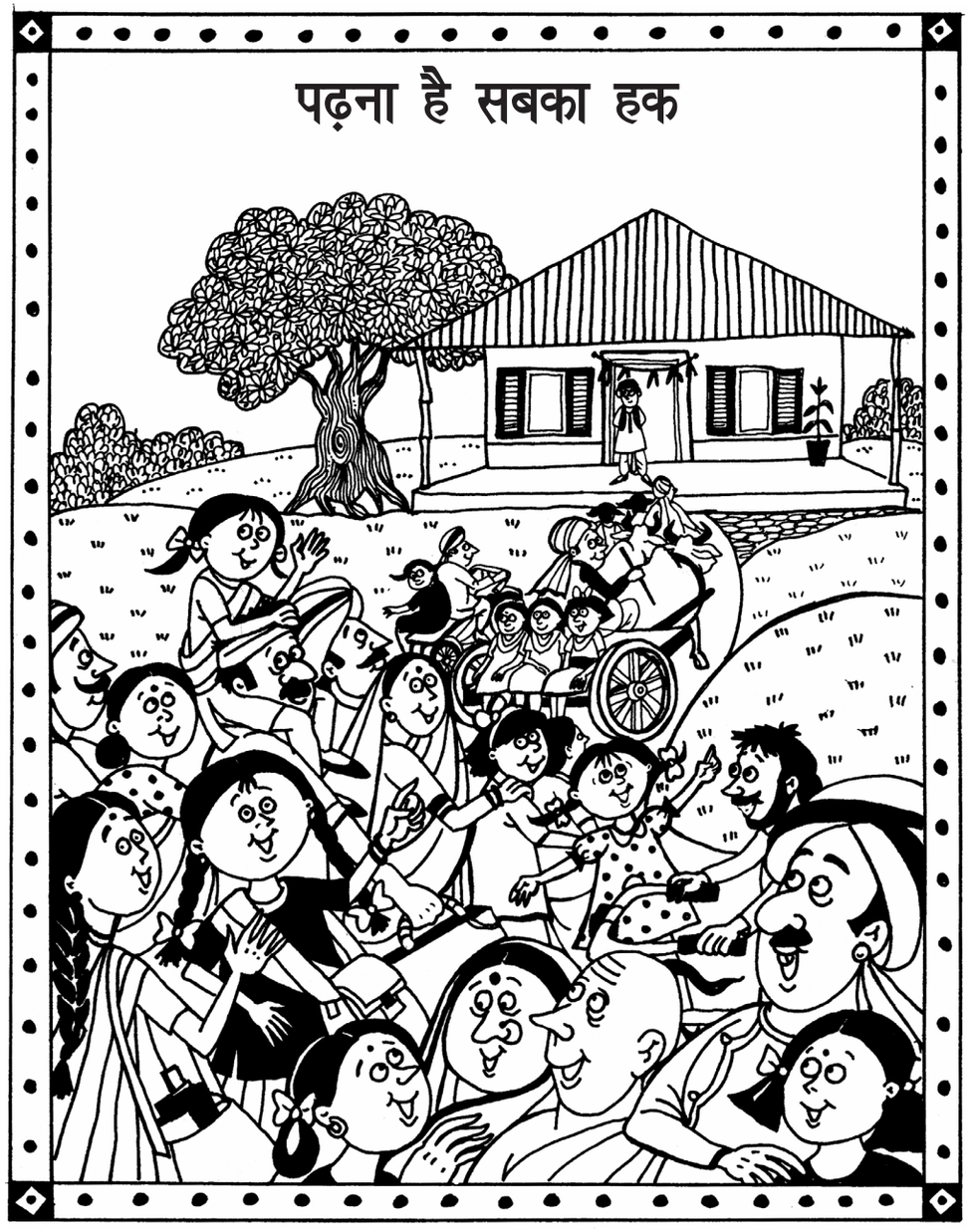

सब लोगों ने तब यह जाना
पढ़ना-लिखना हक है सबका।

हुआ उजाला पतलापुर में,
बाहर आई लड़की जब घर से।

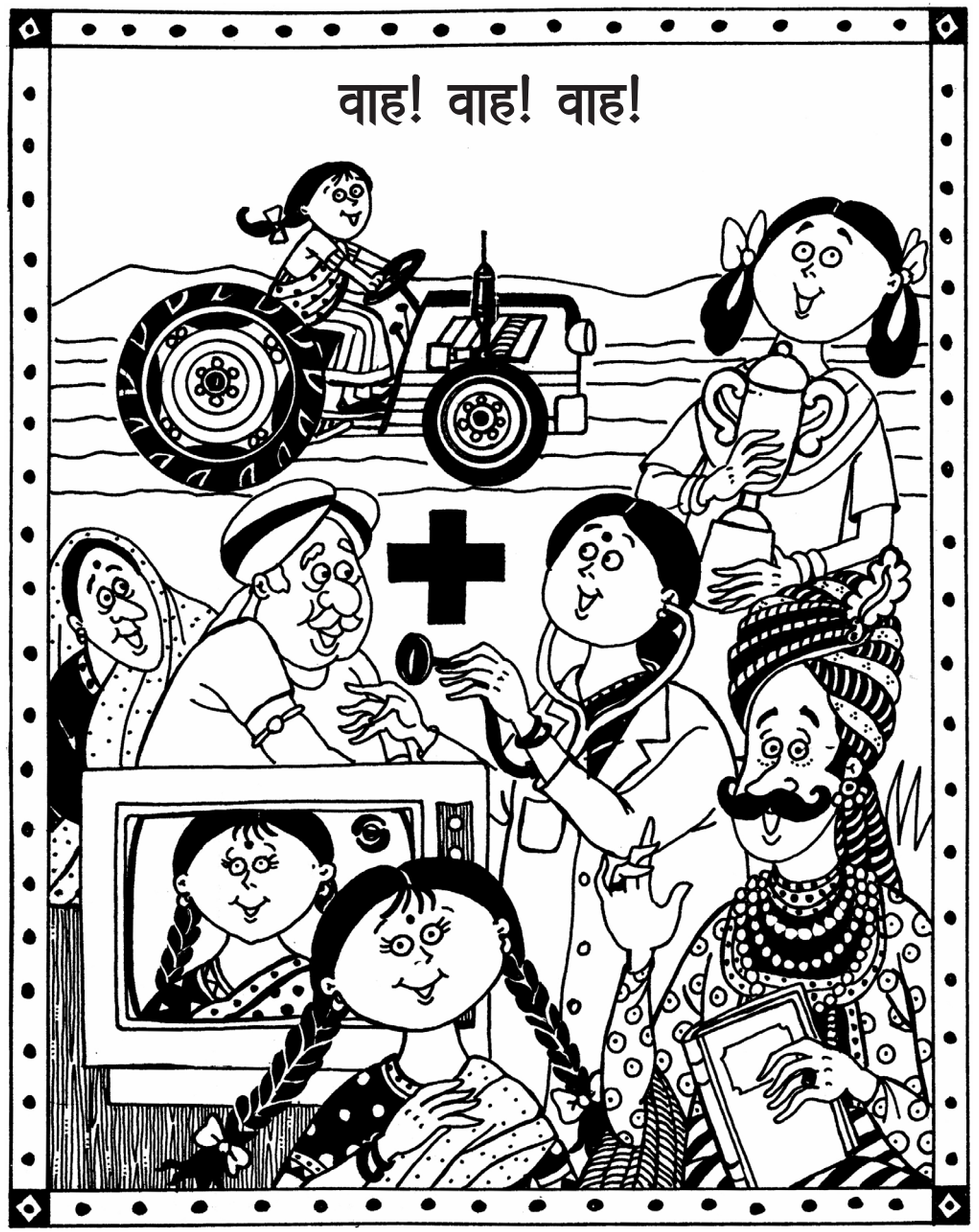

अब सब कहते, 'लड़के तो लड़के,
लड़की के पर क्या हैं कहने!'

लाला ताला लाता पतला

चींटी चट टच चाटी चाट

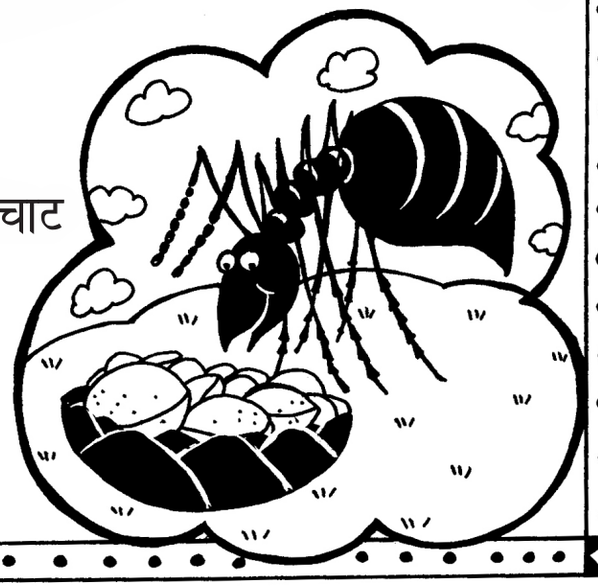

कसकर सर कर कसरत

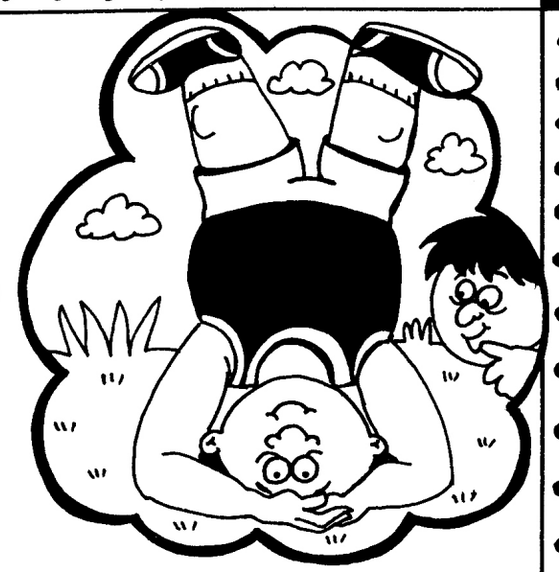

कड़क लड़की लड़क कड़क लकड़ी

चाहे चाचा चह चहा चाहा

लाला हक हुक्मगमदास

एक था मोटा राजा

में

नये नये शब्द

मोटू	बेटी	तेजस
खड़े	लिखना	लड़के
नगर	विचार	उजाला
लोगों	नज़र	बाहर
इनाम	हज़ार	पतलापुर

क्या तुमने यह **'हुलगुल कथा'** पढ़ी?
मेरे पास तुम्हारे लिए ये भी हैं:

1. ठहरो
2. आधा राजा आधा ओझा
3. गिली गिली गोला!
4. उड़न छू ...

'मैं अपने आप पढ़ूँ - हुलगुल कथा' एन.एफ.ई. के लिए कथा टीम द्वारा तैयार की गई एक नवीन विचारधारा पर आधारित पाठ्य-सामग्री है।

vxMe cxMe xkyexky

,u-,Q-bl dk tkn e Mky

^e viu vki i<° & gyxy dFkk]* ,u-,Q-bl- d fy, gA ;s etnkj fdrkc dFkk }kjk r;kj dh xbl gA gyxy dFkk e 8&14 lky dh yMfd;k vkj yMdk dk vkdf"kr dju d fy, gkL; vkj rdcnh dk Hkjiij rek'kk gA

dFkk jpukRed y[ku dh ,d itkhd'r] vykHkdkjh lLFkk gA